Rev. Dr . Timothy C. Geoffrion,
Ph.D., D.D. Founder
Faith ,Hope, and Love Global Ministries

Essay by: Rev.Dr Timothy .C.Geoffrion,
Translated to Hindi by: Pastor Arvind Deep

Spiritual Truth 2 Remember – Expect God to be at work in your Life ,leading and Guiding

परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आपके जीवन में काम करे,आपकी अगवाई करे और मार्गदर्शक बनाए...।
आप भी को जय मसीह की आज के संदेश मे आप कैसे परमेश्वर और पवित्र आत्मा को शामिल करते है, उन परिस्थिति मे जब आपको कुछ समझ नही आता, आप प्रताढ़ित होते है, यह संदेश आपकी अगवाई करे

आत्मिक सत्य २: परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आपके जीवन में काम करे,आपकी अगवाई करे और मार्गदर्शक बनाए…।

यह मार्च की शुरुआत थी। COVID-19 संकट वि'श्व स्तर पर बढ़ रहा था। म्यांमार में अभी तक कोई पुष्टि किए गए मामले दर्ज नहीं किए गए थे, लेकिन उपन्यास कोरोनवायरस पूरी दुनिया में फैल रहा था और मिनेसोटा में मेरे गृह राज्य की ओर बढ़ रहा था। मैं यांगून में था, तीन सप्ताह की कार्यशालाओं में लगभग 200 पादरियों के लिए सेवा के एक महीने की तैयारी कर रहा था, क्रमशः मंडलाय, कनापेटलेट (दक्षिणी चिन राज्य), और सिटवे (राखीन स्टेट) में। मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे इसे सुरक्षित से सेवा कर इन देशो से तुरंत बाहर निकलना चाहिए? एक पति और पिता के रूप में, सबसे प्यारी बात क्या थी? एक सेवक और शिक्षक के रूप में सबसे अधिक ज़िम्मेदार चीज़ क्या थी? क्या मुझे इन पादरियों के लिए इन कार्यशालाओं का संचालन करने के लिए दबाव डालना चाहिए, जो अपने लिए इस प्रशिक्षण की गिनती कर रहे थे और उन चर्चों का लाभ उठा रहे थे, जिन्हें वे सेवा देते थे या घर पर ही रहते , अनिवार्य क्या था।

जांच करने में, उत्तर स्पष्ट लगते हैं। लेकिन उस समय, जैसा निकट संकट और अनिश्चितता के बीच अक्सर होता है, "सही" विकल्प इतने स्पष्ट नहीं थे। इस स्थिति में, मेरे लिए, मेरे परिवार की देखभाल करने, अपने स्वयं के स्वास्थ्य की रक्षा करने और अपनी सेवकाई की प्रतिबद्धताओं और जिम्मेदारियों को पूरा करने के मूल्य मेरे भीतर संघर्ष में थे।

हम में से कई के लिए, हम ऐसी परिस्थितियों में मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं, लेकिन जवाब हमेशा आसानी से नहीं आते हैं। हमारी आंतरिक उथल-पुथल हमें चिंतित या भ्रमित महसूस कराती है। यदि संकट काफी बड़ा है, तो आत्मा के नेतृत्व में निर्णय लेने के बजाय, एक लड़ाई-उड़ान- (या) फ्रीज प्रतिक्रिया में किक हो सकती है। अर्थात, हम साहसपूर्वक खतरे को नजरअंदाज कर सकते हैं और समस्या पर सिर पर हमला करा सकते हैं, लेकिन ऐसा कर सकते हैं। आँख बंद करके या मूर्खतापूर्वक। या, हम जितनी जल्दी हो सके भाग सकते हैं, केवल बाद में पता चलता है कि हम घबरा गए थे। खतरा उतना बड़ा नहीं था जितना हम डरते थे, और हम उन लोगों की सेवा करने का अवसर चूक गए जो हम पर भरोसा कर रहे थे। या, हम इतने चिंतित हो सकते हैं कि हम स्थिर हो जाएं, कोई निर्णय लेने में असमर्थ; लेकिन हमारे अनिर्णय से हम एक मापा, बुद्धिमान, समय पर प्रतिक्रिया करने में विफल रहते हैं। इनमें से कोई भी फ़ाइट-फ़्लाइट- या फ़्रीज़ इंस्टिंक्ट हमारे लिए काफी सामान्य और सामान्य हो सकता है, और कभी-कभी खतरे के समय भी सहायक होता है; लेकिन आत्मा के नेतृत्व में निर्णय लेने से अधिक आवेगों, अंतर्ज्ञान या व्यक्तिगत बुद्धि पर निर्भर करता है।

आध्यात्मिक सत्य २ परमेश्वर से अपेक्षा करें कि वह आपके जीवन में काम करे, आपकी अगवाई और मार्गदर्शन करे; और तदनुसार कार्य करें। (नीतिवचन ३:५-६ याकुब १:५-६)

परमेश्वर में क्या भरोसा दिखता है

मेरी पत्नी, स्टाफ के सदस्यों, सेवकाई के साझेदारों और मैंने इन सवालों पर व्यंग किया, पवित्र आत्मा ने मुझे याद दिलाया कि हमें हमारे निर्णय लेने में मार्गदर्शन करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता है। मेरे कंधों पर इन अनुत्तरित प्रश्नों के सभी भार वहन करने के बजाय, मुझे यह याद करते हुए राहत मिली कि अनिश्चितता के इस चिंताजनक समय में मैं अकेला नहीं था। परमेश्वर वहाँ मदद करने के लिए मौजूद था। मुझे इस पर विश्वास करने की जरूरत थी, और इसे पसंद करना था। सुलैमान ने इसे लगभग 3000 साल पहले इसे इस प्रकार से लिखा था:
५ तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
६ उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
अपने पूरे मन से प्रभु पर भरोसा करें और अपने आप पर निर्भर न करे

समझ; आपके सभी तरीकों और कार्य मे उसी को याद कर काम करना ,
और वह आपके मार्ग को सीधा करेगा।
नीतिवचन ३:५-६ एनआईवी
यदि हम संकट के समय या कठिन निर्णय लेने की अपनी समझ और समझ पर भरोसा करते हैं (विशेष रूप से), तो हम आसानी से स्थिति को गलत कर सकते हैं या गलत निष्कर्ष पर जा सकते हैं। बुद्धि और जांच के लिये बाइबिल मार्ग, इसके विपरीत, अगुवा, और मार्गदर्शक के रूप में परमेश्वर पर भारी पड़ता है। सबसे पहले, हमें हमारे सभी तरीकों और कार्य में परमेश्वर को "स्वीकार" करने के लिए कहा जाता है - अर्थात्, हमें अपने आप को धीमा करना होगा, खुद को विनम्र करना होगा, और परमेश्वर के लिए अपनी इच्छा को आत्मसमर्पण करना होगा। फिर, हमें "हमारे सभी कार्य के लिये हृदय में प्रभु के प्रति विश्वास" होना चाहिए, इसका अर्थ है, हमें पवित्र आत्मा पर नेतृत्व और मार्गदर्शन करने के लिए भरोसा करना चाहिए क्योंकि हम जानकारी इकट्ठा करने और हमारे विकल्पों का वजन करते हैं। जाहिर है, इस तरह का भरोसा निष्क्रिय नहीं है। इसमें स्पष्ट रूप से चीजों को स्पष्ट रूप से देखने के लिए ज्ञान के लिए परमेश्वर के पास सक्रिय रूप से पहुंचना और बेहतर तरीके से शामिल करना शामिल है जो हमारी आंखों या दिमागों के साथ नहीं देखा जा सकता है। यह केवल इस तरह के परमेश्वर -केंद्रित विवेक प्रक्रिया के माध्यम से है जिससे हम सर्वोत्तम निर्णय लेने की आशा कर सकते हैं। याकुब इस तरह से प्रक्रिया के बारे में बात करता है:
यदि आप में से किसी के पास बुद्धि की कमी है, तो परमेश्वर से मागे , जो सभी को उदारतापूर्वक और कृतघ्नता से देता है, और यह आपको दिया जाएगा।

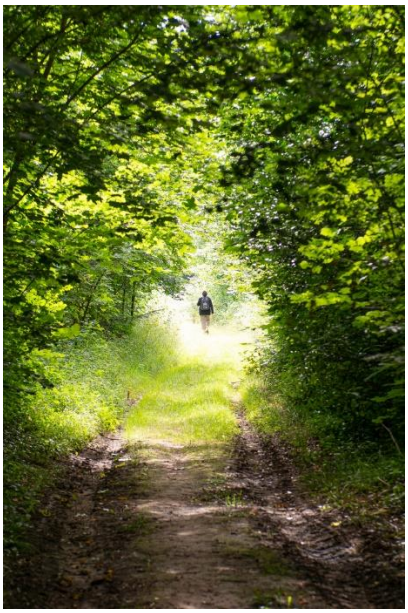

लेकिन विश्वास में मागे, कभी संदेह न करें, क्योंकि जो संदेह करता है वह समुद्र की लहर की तरह है, हवा से संचालित और उछाला जाता है।

याकुब १:५-६ एनआरएसवी

यह हमारी परिस्थितियाँ नहीं हैं जो हमें अस्थिर बनाती हैं, यह हमारे विश्वास की कमी है। संकट के समय में, आत्मा के नेतृत्व वाले निर्णयकर्ता परमेशवर पर निर्भरता को नहीं छोड़ते हैं, जो अक्सर अधिक मौन होते हैं जो वे पसंद करते हैं। इसके बजाय, वे दोनों स्थिति का आकलन करने की जिम्मेदारी लेते हैं, समझदारी से कार्रवाई के सर्वोत्तम पाठ्यक्रम में मदद करते हैं, और तब विचारशील (आवेगी नहीं) निर्णय लेते हैं जब उन्हें आवश्यकता होती है और साथ ही भरोसा होता है कि परमेश्वर मौजूद हैं और उन्हें नेतृत्व करने और मार्गदर्शन करने के लिए सक्रिय हैं। , अक्सर पर्दे के पीछे, बोलने के लिए।जब संकट की घड़ी से होकर जाते है।

इस दोनों और दृष्टिकोण को अपने आप को शांत करने के लिए पर्याप्त स्थान बनाने की आवश्यकता है और पवित्रशास्त्र और प्रार्थना के माध्यम से आत्मा की आवाज़ को सुनने के लिए समय लेना चाहिए। हम इनपुट के लिए विश्वसनीय आध्यात्मिक मार्गदर्शक, सेवक , संरक्षक, सह-कार्यकर्ता और मित्र तक पहुंचेंगे। हम चेतावनी के संकेतों की परवाह किए बिना अपने रास्ते को आगे बढ़ाने की कोशिश नहीं करेंगे। जब तक हम समय खतरे से अपनी रक्षा नहीं करेंगे, न तो हम डर से भागेंगे। हम चीजों को समय पर ढंग से समझने और तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए अटक, जमे हुए, अनिच्छुक नहीं होंगे। हम अपनी प्राथमिकताओं को स्थापित करने में विश्वास और बलिदान सेवा के उनके उदाहरण पर विचार

करते हुए, यीशु पर अपनी आँखें ठीक करेंगे। हम अपने पूरे मन से परमेश्वर पर भरोसा करेंगे, और जब आगे रास्ता साफ हो जाएगा तो कार्रवाई करेंगे।

मेरा अनुभव

मार्च में म्यांमार ने मुझे फिर से आश्वस्त किया कि परेशान और भ्रामक परिस्थितियों के बीच परमेश्वर वास्तव में नेतृत्व और मार्गदर्शन करता है। मुझे निर्णय लेने की प्रक्रिया में पूरी तरह से व्यस्त रहना था, और मुझे अपनी लड़ाई-फ़्लाइट-फ़्रीज़ प्रकार के आवेगों का प्रबंधन करना था, ताकि वे काम न करें। फिर भी, जितना अधिक मैंने कार्यशालाओं और निर्णयों को परमेश्वर के हाथों में रखा, और उतना ही मैं आत्मा की शांत आवाज़ को सुनने और अपने चारों ओर दूसरों की आवाज़ सुनने के लिए तैयार था, जितना अधिक मैं यह सुन पा रहा था कि मुझे क्या चाहिए सुनने के लिए और देखने के लिए जो मुझे चाहिए था। समय के साथ, उत्तर सामने आए।

अंतिम यात्रा कार्यक्रम मेरे द्वारा पहली बार विचार किए गए किसी भी परिदृश्य से अलग था, लेकिन परिणाम म्यांमार में 12 दिन आत्मा-धन्य भरे दिन थे और बाद में मेरे परिवार में वापसी हुई। एमआईटी में स्नातक सप्ताह सार्थक कनेक्शन और सेवकाई से भरा था। विश्वास, आशा, और प्रेम विशवयापी सेवा के कर्मचारी सदस्य, सॉ न्यूटन, और मैंने योजना के अनुसार मंडलीय में स्पिरिट-लेड लीडरशिप आत्मा से अगवाई कार्यशाला का आयोजन किया। फिर, जब हालात फिर से बदल गए (गृहयुद्ध और अप्रत्याशित संकट), यह घर जाने का समय था। मैं तीन हफ्ते पहले अपनी पत्नी जिल के प्यार भरे हाथों में वापस आ गया। मुझे इस बात के लिए आभारी महसूस हुआ कि परमेश्वर ने सेवकाई के माध्यम से कैसे काम किया, दो कार्यशालाओं को अभी के लिए जाने के बारे में शांतिपूर्ण, और समान रूप से आश्वासन किया गया कि घर वह था जहां मुझे अब होना चाहिए।

आध्यात्मिक प्रयोग

कठिन निर्णय लेने की आवश्यकता के बीच में, परमेश्वर से यह अपेक्षा न करें कि आपको वह उत्तर देगा जो आप अभी देख रहे हैं। इसके बजाय, रास्ते में आपका मार्गदर्शन करने के लिए उसपर पर भरोसा

करते हुए निर्णय लेने की प्रक्रिया में पूरी तरह से संलग्न रहें। संकट या महत्वपूर्ण निर्णय का सामना करें, अपनी इच्छा और योजना को परमेश्वर के सामने आत्मसमर्पण कर दें, अपनी योजनाओं और मूल इच्छाओं के लिए अपनी संलग्नक जारी करें, जो कुछ भी आपको देखने की आवश्यकता है उसे देखने की क्षमता के लिए पूछें। फिर, जब यह कार्य करने का समय हो, तो निर्णय लेने या ज़रूरत होने पर योजनाओं को बदलने से डरे नही ।

हो सकता है , आप हमेशा "सही" निर्णय नहीं लेंगे, लेकिन आपका निर्णय आत्मा-नेतृत्व दोनों के दृष्टिकोण और दृष्टिकोण के साथ होने की अधिक संभावना है। और, कोई बात नहीं, आप अनुभव से सीखेंगे। जब आप कठिन निर्णय लेने के कठिन परिश्रम में संलग्न होते हैं, तो ईमानदारी से प्रार्थना में परमेश्वर की तलाश करते हैं, और अपने पूरे दिल से उसपर पर भरोसा करते हैं, आपका विश्वास भी बढ़ेगा। आप भविष्य में अच्छे निर्णय लेने के लिए मजबूत और अधिक सक्षम बनेंगे। अंततः, विवेक और निर्णय लेने के लिए इस तरह के परमेश्वर -केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से, आप उसके करीब बढ़ेंगे और आपके समुदाय में आत्मा के नेतृत्व वाले बुजुर्गों की सेवा करने में अधिक सक्षम हो जाएंगे जब उन्हें आपकी सबसे अधिक आवश्यकता होगी।

यह निबंध श्रृंखला, "हम परमेश्वर से क्या अपेक्षा करे उन परिस्थिति मे जब हम सेवा मे प्रताढित होते है, शैतान विषम संकट लेकर आता है। 2020 COVID-19 वैश्विक संकट के जवाब में बनाया गया ,यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि विश्वासियों को कैसे परेशान समय में परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है।

परमेश्वर आपकी अगवाइ करे आज के अध्ययन मे राजा यहोशापात को सामिल करे, वह भी विषम परिस्थिति से होकर गुजर रहा था, जब उसे पता चला की उसके सामने अनगिनत संकट आने वाला है, वह जानता था, अगर वह आने वाले शत्रुओं का सामना अपने शारीरिक बल से करे तो वह युद्ध मे परास्त

होगा, वह परमेश्वर और उसके अगवाई की खोज किया, और बिना युद्ध के वह शत्रुओं मे विजय हासिल किया, २ इतिहास २०:१-१२

आइये जब हमारे सामने यैसे संकट आए तब हम परमेश्वर से बुद्धि मागे और, हम जब परमेश्वर को शामिल अपने किसी भी युद्ध क्षेत्र मे रखते है, वह परिस्थिति को भलाई मे बदलता है।

परमेश्वर आप सभो की अगुवाई करे

बिशप अरविंद दीप